संस्कृति

डॉ सच्चिदानंद जोशी

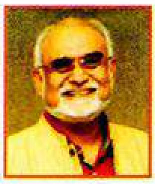

विकास भी, विरासत भी भारत का सभ्यतागत पुनर्जागरण

कई मायनों में समकालीन भारत उस प्रश्न का उत्तर खोजने का प्रयास कर रहा है, जिसका सामना सभी प्राचीन सभ्यताओं को करना पड़ता है: क्या कोई सभ्यता अपने अतीत को पुनः प्राप्त कर सकती है, बिना उसमें कैद हुए? और क्या कोई आधुनिक राष्ट्र अपनी पहचान को भूले बिना प्रगति कर सकता है?

आधुनिक भारत के उदय को प्रायः आर्थिक विकास, तकनीकी नवाचार, आधारभूत संरचना के विस्तार और लोकतांत्रिक संस्थाओं के सुदृढ़ीकरण के आधार पर आंका जाता है। किंतु इन उपलब्धियों के समानांतर, पिछले एक दशक में एक और परिवर्तनकारी प्रक्रिया भी विकसित हुई है, भारत की सभ्यतागत विरासत के साथ पुनः जुड़ाव की प्रक्रिया। संग्रहालयों, विश्वविद्यालयों, पुरातात्त्विक स्थलों, तीर्थ केंद्रों, पांडुलिपियों, सांस्कृतिक परिदृश्यों तथा अंतरराष्ट्रीय मंचों पर भारत ने अपनी सांस्कृतिक जड़ों से पुनः जुड़ने का एक महत्त्वपूर्ण प्रयास देखा है। इस प्रक्रिया को अब बढ़ते हुए रूप में सभ्यतागत पुनर्जागरण कहा जा रहा है। यह ऐतिहासिक स्मृति को पुनः प्राप्त करने, सांस्कृतिक संस्थानों को पुनर्जीवित करने, पारंपरिक ज्ञान प्रणालियों के संरक्षण तथा वैश्विक मंच पर भारत की विरासत को आत्मविश्वास के साथ प्रस्तुत करने का एक सचेत प्रयास है।

इस परिवर्तन के केंद्र में प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी का "विकास भी, विरासत भी" का दृष्टिकोण है। यह दर्शन आधुनिकीकरण और सांस्कृतिक संरक्षण के बीच किसी संघर्ष की धारणा को अस्वीकार करता है। इसके बजाय यह आधारभूत संरचना विकास, शिक्षा, पर्यटन, प्रौद्योगिकी और आर्थिक प्रगति को भारत की सभ्यतागत धरोहर के संरक्षण के साथ जोड़ने का प्रयास करता है। अब विरासत को केवल अतीत की एक स्मृति या अवशेष के रूप में नहीं देखा जाता, बल्कि उसे सांस्कृतिक आत्मविश्वास, राष्ट्र-निर्माण और सतत विकास के एक महत्त्वपूर्ण संसाधन के रूप में समझा जाता है।

इस दृष्टिकोण की बौद्धिक आधारशिला "पंच प्रण" की अवधारणा में दिखाई देती है, जिसे भारत की स्वतंत्रता के 75वें वर्ष के उत्सव के दौरान प्रस्तुत किया गया था। इन राष्ट्रीय संकल्पों में भारत की विरासत पर गर्व करने और औपनिवेशिक मानसिकता से ऊपर उठने की प्रतिबद्धता, समकालीन सांस्कृतिक नीति की एक प्रमुख विशेषता बनकर उभरी है। इस दृष्टि ने भारत के ऐतिहासिक अनुभवों, बौद्धिक परंपराओं और सांस्कृतिक उपलब्धियों के प्रति स्वदेशी दृष्टिकोण से नए सिरे से जुड़ाव को प्रोत्साहित किया है।

राष्ट्रीय प्रतीकों और संस्थानों की पुनर्कल्पना

इस सभ्यतागत दृष्टि की सबसे स्पष्ट अभिव्यक्तियों में से एक राष्ट्रीय संस्थानों और सार्वजनिक स्थलों की पुनर्कल्पना रही है। नया संसद भवन अपनी वास्तुकला, कलात्मक आकृतियों और सांस्कृतिक अभिव्यक्तियों के माध्यम से भारत के प्राचीन सभ्यतागत मूल्यों को प्रतिबिंबित करता है, जो परंपरा और आधुनिक लोकतांत्रिक आकांक्षाओं का सहज समन्वय प्रस्तुत करता है। संसद भवन में छह औपचारिक प्रवेश द्वार हैं, जिन्हें "गज-द्वार, अश्व-द्वार, गरुड़-द्वार, हंसा-द्वार, मकर-द्वार और शार्दुला-द्वार" कहा जाता है। प्रत्येक द्वार भारतीय सांस्कृतिक परंपराओं से प्रेरित शुभ पशुओं की बलुआ पत्थर से बनी मूर्तियों से सुसज्जित है। ये प्रतीकात्मक संरक्षक बुद्धिमत्ता, शक्ति, ज्ञान, सफलता और विजय जैसे गुणों का प्रतिनिधित्व करते हैं तथा समकालीन लोकतांत्रिक वास्तुकला में भारत की सभ्यतागत विरासत के एकीकरण को दर्शाते हैं। भवन में प्रदर्शित कलाकृतियों, भित्तिचित्रों, मूर्तियों और देशभर के लोक कलाकारों द्वारा निर्मित स्वदेशी शिल्पों का विशाल संग्रह भारत की सांस्कृतिक परंपराओं की निरंतरता और विविधता को प्रदर्शित करता है। संविधान दीर्घा वेदों, महाकाव्यों, प्राचीन संस्थाओं, अभिलेखों और पांडुलिपियों के संदर्भों के माध्यम से भारत की लोकतांत्रिक विरासत को रेखांकित करती

लेखक वर्तमान में संस्कृति मंत्रालय के अंतर्गत 'इंदिरा गांधी राष्ट्रीय कला केंद्र' के सदस्य सचिव तथा 'भारतीय विरासत संस्थान' के कुलपति हैं।
ईमेल: ms@ignca.nic.in

है तथा भारत को 'लोकतंत्र की जननी' के रूप में स्थापित करने के विचार को सुदृढ़ करती है।

नए संसद भवन में 'सेंगोल' की स्थापना ने चोल राजवंश की उस प्राचीन परंपरा को पुनर्जीवित किया, जो राजनीतिक सत्ता के धर्मसम्मत हस्तांतरण और उसके न्यायपूर्ण प्रयोग का प्रतीक थी। लोकसभा अध्यक्ष के आसन के निकट सेंगोल की स्थापना के माध्यम से सरकार ने भारत की लोकतांत्रिक संस्थाओं को उस सभ्यतागत आदर्श से पुनः जोड़ने का प्रयास किया, जिसके अनुसार शासन का संचालन 'धर्म, न्याय और नैतिक उत्तरदायित्व' के मार्गदर्शन में होना चाहिए। यह स्थापना भारत की स्वतंत्रता में सेंगोल की ऐतिहासिक भूमिका का स्मरण कराती है और भारत की प्राचीन राजनीतिक परंपराओं तथा वर्तमान लोकतांत्रिक व्यवस्था के बीच निरंतरता को भी रेखांकित करती है।

इसी प्रकार 'राजपथ' का नाम बदलकर 'कर्तव्य पथ' किया जाना औपनिवेशिक सत्ता-केंद्रित मानसिकता से भारतीय सभ्यता के 'कर्तव्य और लोक-उत्तरदायित्व' के आदर्श की ओर बदलाव का प्रतीक है। प्रधानमंत्री कार्यालय और 'सेंट्रल विस्टा परिसर' को 'सेवा तीर्थ' के रूप में परिकल्पित किया जाना, इस पारंपरिक भारतीय विश्वास को अभिव्यक्त करता है कि शासन एक पवित्र दायित्व है, जो राष्ट्र और उसके नागरिकों की सेवा में निहित है। इन सभी पहल का उद्देश्य समकालीन राज्य संस्थाओं को शाश्वत सभ्यतागत मूल्यों के साथ जोड़ना रहा है।

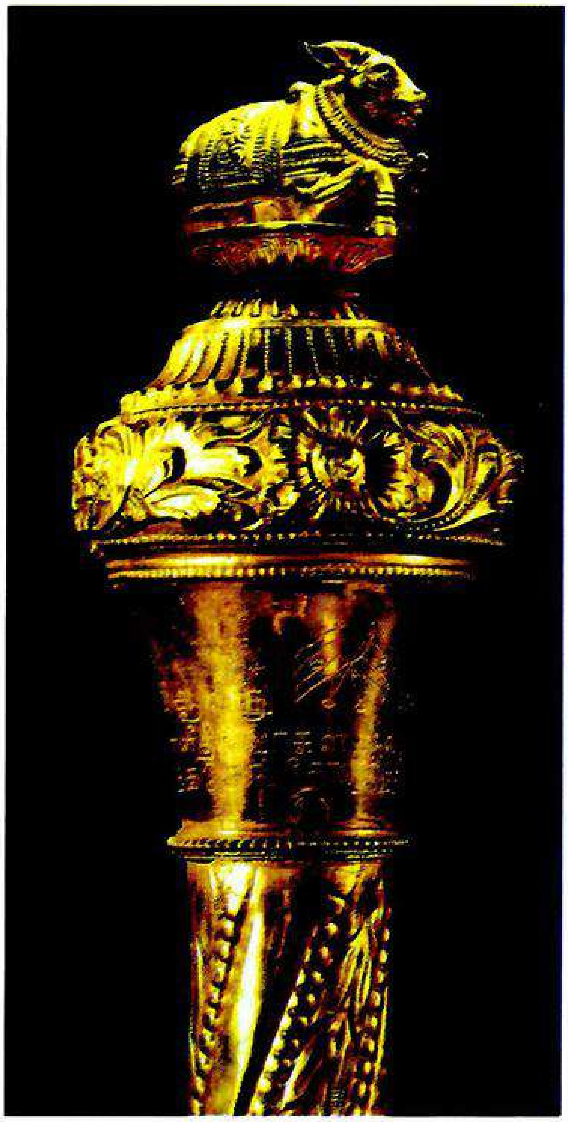

सेंगोल : न्यायपूर्ण शासन की भावना

ज्ञान परंपराओं का पुनरुद्धार

भारत के सभ्यतागत पुनर्जागरण का एक अन्य महत्त्वपूर्ण आयाम उसकी ज्ञान-परंपराओं को पुनः प्राप्त करने और संरक्षित करने का प्रयास है। सदियों तक भारत ने दर्शन, गणित, खगोल विज्ञान, चिकित्सा, भाषाविज्ञान, शासन, वास्तुकला और अध्यात्म जैसे विषयों पर विपुल साहित्य का सृजन किया। इस ज्ञान-संपदा का बड़ा भाग आज भी देशभर के पुस्तकालयों, मठों, मंदिरों और निजी संग्रहों में सुरक्षित लाखों पांडुलिपियों के रूप में विद्यमान है। इस बौद्धिक विरासत के महत्त्व को समझते हुए भारत सरकार ने 'ज्ञान भारतम् मिशन' की शुरुआत की है, जिसका उद्देश्य भारत की पांडुलिपि-संपदा का संरक्षण, डिजिटलीकरण, सूचीकरण तथा व्यापक प्रसार करना है। उन्नत डिजिटल तकनीकों और राष्ट्रीय ज्ञान-भंडारों के माध्यम से यह पहल नाजुक तथा क्षरणशील पांडुलिपियों को शोधकर्ताओं और आम नागरिकों के लिए सुलभ ज्ञान-स्रोतों में परिवर्तित करने का प्रयास कर रही है।

इसी प्रकार नालंदा विश्वविद्यालय का पुनरुद्धार भी भारत की उस आकांक्षा का प्रतीक है, जिसके माध्यम से वह ज्ञान और शिक्षा के वैश्विक केंद्र के रूप में अपनी ऐतिहासिक भूमिका से पुनः जुड़ना चाहता है। एक समय विश्व के प्रमुख विश्वविद्यालयों में गिने जाने वाले नालंदा में एशिया के विभिन्न देशों से विद्वान अध्ययन और शोध के लिए आते थे। यह केवल शिक्षा का केंद्र ही नहीं था, बल्कि बौद्धिक संवाद और विचारों के आदान-प्रदान का भी प्रमुख मंच था। नालंदा का पुनर्जीवन केवल एक ऐतिहासिक संस्थान की पुनर्स्थापना नहीं है, बल्कि यह विद्वता, विमर्श और ज्ञान-सृजन के प्रति भारत की प्रतिबद्धता की पुनर्पुष्टि भी है।

इन प्रयासों को राष्ट्रीय शिक्षा नीति (एनईपी) 2020 और अधिक सुदृढ़ बनाती है जिसमें भारतीय ज्ञान प्रणालियों, बहुभाषी शिक्षा तथा स्वदेशी बौद्धिक परंपराओं को समकालीन शिक्षा व्यवस्था में समाहित करने का प्रयास किया गया है। इस दृष्टि को आगे बढ़ाते हुए 'वन नेशन, वन सब्सक्रिप्शन' (ओएनओएस) पहल शुरू की गई है, जिसका उद्देश्य विद्वतापूर्ण और शोध-संबंधी संसाधनों तक व्यापक एवं लोकतांत्रिक पहुंच सुनिश्चित करना है। यह एक ऐसे समन्वित दृष्टिकोण को दर्शाती है जिसमें बौद्धिक और सांस्कृतिक विकास को परस्पर पूरक माना गया है।

भारत के सांस्कृतिक पुनर्जागरण का एक अन्य प्रमुख स्तंभ 'जीवित विरासत' का संरक्षण है। भारत की विरासत केवल स्मारकों और संग्रहालयों में ही नहीं, बल्कि लोक परंपराओं, मौखिक कथाओं, लोक प्रदर्शन कलाओं, अनुष्ठानों, शिल्पकला, उत्सवों और स्थानीय ज्ञान प्रणालियों में भी जीवित है।

'राष्ट्रीय सांस्कृतिक मानचित्रण मिशन' तथा उसके प्रमुख घटक 'मेरा गांव मेरी धरोहर' के माध्यम से भारत सरकार ने सांस्कृतिक संसाधनों के दस्तावेजीकरण का विश्व के सबसे बड़े अभियानों में से

एक प्रारंभ किया है। गांवों और समुदायों की सांस्कृतिक विशेषताओं का डिजिटल अभिलेखन करके यह पहल भारत की जीवित सांस्कृतिक परंपराओं का एक अभूतपूर्व भंडार तैयार कर रही है। साथ ही, यह विरासत संरक्षण में स्थानीय समुदायों की सक्रिय भागीदारी को भी प्रोत्साहित कर रही है।

पवित्र स्थलों का पुनरुद्धार और सांस्कृतिक पर्यटन

भारत का सभ्यतागत पुनर्जागरण उसकी पवित्र और सांस्कृतिक धरोहर-स्थलों के पुनरुद्धार में भी स्पष्ट रूप से दिखाई देता है। काशी विश्वनाथ धाम कॉरिडोर, उज्जैन में महाकाल लोक, केदारनाथ पुनर्निर्माण परियोजना तथा अयोध्या और राम मंदिर का विकास भारत के कुछ सबसे महत्त्वपूर्ण तीर्थस्थलों को नए स्वरूप में परिवर्तित करने के उल्लेखनीय उदाहरण हैं। इन परियोजनाओं में विरासत संरक्षण को आधुनिक अवसंरचनाओं और जन-सुविधाओं के साथ जोड़ा गया है। यह दर्शाता है कि किस प्रकार पवित्र भूगोल को सुरक्षित रखते हुए उसे अधिक सुलभ और जनोन्मुख बनाया जा सकता है।

इन पहल को 'प्रसाद' (पीआरएएसएचएडी - पिलग्रिमेज रीजुवेनेशन एंड स्पिरिचुअल हेरिटेज ऑग्मेंटेशन ड्राइव) तथा 'स्वदेश दर्शन' जैसी योजनाओं का भी समर्थन प्राप्त है। ये कार्यक्रम विरासत संरक्षण को पर्यटन विकास, रोज़गार सृजन और स्थानीय आर्थिक प्रगति के साथ जोड़ते हैं। सामूहिक रूप से ये प्रयास यह स्पष्ट करते हैं कि, कैसे सांस्कृतिक विरासत, क्षेत्रीय विकास में प्रत्यक्ष योगदान देने के साथ-साथ सांस्कृतिक पहचान को भी सुदृढ़ करती है।

संग्रहालय भी सांस्कृतिक नीति के महत्त्वपूर्ण साधन के रूप में उभरकर सामने आए हैं। प्रस्तावित 'युग युगीन भारत राष्ट्रीय संग्रहालय' का उद्देश्य आधुनिक तकनीकों और विषयगत दीर्घाओं के माध्यम से सहस्राब्दियों से चली आ रही भारत की सभ्यतागत यात्रा को प्रस्तुत करना है। इसी प्रकार प्रधानमंत्री संग्रहालय तथा संग्रहालयों के आधुनिकीकरण से संबंधित कार्यक्रम इस व्यापक प्रयास का हिस्सा हैं, जिनका लक्ष्य संग्रहालयों को वस्तुओं के स्थिर भंडार से जन-शिक्षा, ऐतिहासिक व्याख्या और सांस्कृतिक संवाद के सक्रिय केंद्रों में रूपांतरित करना है। ये पहल इस परिवर्तन का संकेत देती हैं कि अब उद्देश्य केवल विरासत का संरक्षण भर नहीं, बल्कि नागरिकों को उससे सक्रिय रूप से जोड़ना भी है।

सांस्कृतिक धरोहरों की वापसी और वैश्विक मान्यता

भारत के सांस्कृतिक पुनर्जागरण का एक महत्त्वपूर्ण आयाम राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय स्तर पर सांस्कृतिक धरोहरों के संरक्षण तथा उनकी पुनर्प्राप्ति पर दिया गया नया बल भी है। 600 से अधिक चोरी की गई प्राचीन कलाकृतियों (ऐतिहासिक धरोहरों) की सफल वापसी- जिसमें श्रद्धेय श्रीपुरंथन नटराज मूर्ति, काशी की मां अन्नपूर्णा देवी की मूर्ति और ऐतिहासिक चोल ताम्रपत्र शामिल हैं, भारत के सांस्कृतिक और सभ्यतागत पुनरुत्थान के एक शक्तिशाली प्रतीक के रूप में उभरी है।

इन पुरावशेषों की वापसी केवल कलाकृतियों की पुनर्प्राप्ति नहीं है, बल्कि यह सांस्कृतिक स्मृति, आध्यात्मिक परंपराओं और ऐतिहासिक निरंतरता की पुनर्स्थापना का भी प्रतीक है। भारत की कलात्मक उत्कृष्टता और ऐतिहासिक विरासत को अभिव्यक्त करने वाली इन धरोहरों की घर वापसी ने राष्ट्रीय चेतना को सुदृढ़ किया है तथा अपनी सांस्कृतिक विरासत के संरक्षण के प्रति देश की प्रतिबद्धता को पुनः स्थापित किया है।

इसी प्रकार भगवान बुद्ध से संबद्ध पिपरहवा अवशेषों की पुनर्प्राप्ति तथा 'द लाइट एंड द लोटसः रेलिक्स ऑफ द अवेकेंड वन' प्रदर्शनी का किला राय पिथौरा में आयोजन भी भारत की सभ्यतागत

भारत मंडपम, नई दिल्ली में स्थित 27 फीट ऊंची प्रतिष्ठित नटराज प्रतिमा

नई दिल्ली स्थित नए संसद भवन की झलक

धरोहर को पुनः प्राप्त करने और संरक्षित करने की प्रतिबद्धता का प्रतीक है। पवित्र बौद्ध अवशेषों को पुनः राष्ट्रीय सांस्कृतिक परिधि में लाकर तथा सुव्यवस्थित प्रदर्शनी के माध्यम से जनता के समक्ष प्रस्तुत करके भारत ने विश्व की सबसे प्राचीन आध्यात्मिक परंपराओं में से एक के संरक्षक के रूप में अपनी भूमिका को और सुदृढ़ किया है। ये पहल उस व्यापक सांस्कृतिक पुनर्जागरण को प्रतिबिंबित करती हैं, जिसका उद्देश्य समकालीन समाज को भारत की गहरी ऐतिहासिक और आध्यात्मिक विरासत से पुनः जोड़ना है।

साथ ही, भारत ने संयुक्त राष्ट्र शैक्षिक, वैज्ञानिक एवं सांस्कृतिक संगठन (यूनेस्को) के माध्यम से अपनी सांस्कृतिक विरासत को अंतरराष्ट्रीय मान्यता दिलाने के लिए भी सक्रिय प्रयास किए हैं। भारत की अनेक परंपराओं, विरासत स्थलों और दस्तावेजी धरोहरों को यूनेस्को की मूर्त विरासत, अमूर्त सांस्कृतिक विरासत तथा मेमोरी ऑफ द वर्ल्ड रजिस्टर की सूचियों में शामिल किया गया है। हाल की उपलब्धियों में दीपावली का यूनेस्को की मानवता की अमूर्त सांस्कृतिक विरासत की प्रतिनिधि सूची में अभिलेखित होना तथा भगवद्गीता और 'भरतमुनि के नाट्यशास्त्र' का यूनेस्को के मेमोरी ऑफ द वर्ल्ड रजिस्टर में स्थान प्राप्त करना उल्लेखनीय है। ये मान्यताएं भारत की सभ्यतागत विरासत की समृद्धि और निरंतरता की पुष्टि करती हैं तथा दर्शन, साहित्य, प्रदर्शन कलाओं, अध्यात्म और मानव ज्ञान के क्षेत्र में उसके योगदान को रेखांकित करती हैं। सांस्कृतिक पुनर्जागरण ने राष्ट्रीय एकता को सुदृढ़ करने में भी महत्त्वपूर्ण योगदान दिया है।

'एक भारत श्रेष्ठ भारत' तथा 'काशी तमिल संगमम' जैसी पहल भारत के विभिन्न क्षेत्रों के बीच ऐतिहासिक और सांस्कृतिक संबंधों को उजागर करती हैं। सांस्कृतिक आदान-प्रदान को बढ़ावा देकर और साझा परंपराओं का उत्सव मनाकर ये कार्यक्रम इस तथ्य को सुदृढ़ करते हैं कि भारत की विविधता को उसकी गहरी सभ्यतागत एकता पोषित करती है।

सॉफ्ट पावर और सांस्कृतिक कूटनीति का विस्तार

राष्ट्रीय सीमाओं से परे भी भारत का सांस्कृतिक पुनर्जागरण उसके अंतरराष्ट्रीय संबंधों को नई दिशा प्रदान कर रहा है। सांस्कृतिक कूटनीति भारत की वैश्विक उपस्थिति का एक महत्त्वपूर्ण घटक बन गई है। अंतरराष्ट्रीय योग दिवस का विश्वव्यापी उत्सव एक प्राचीन भारतीय साधना-पद्धति को वैश्विक सांस्कृतिक आंदोलन में परिवर्तित कर चुका है। इसी प्रकार आयुर्वेद, बौद्ध धर्म, पारंपरिक चिकित्सा पद्धतियों और भारतीय दर्शन के प्रति विश्वभर में बढ़ती रुचि भारत की सॉफ्ट पावर के बढ़ते प्रभाव को दर्शाती है।

वैश्विक मंच पर भारत की सभ्यतागत पहचान

भारत मंडपम में स्थापित नटराज की विशाल कांस्य प्रतिमा, ब्रह्मांडीय व्यवस्था भारत की उस गहन सभ्यतागत समझ का प्रतीक है, जिसमें सृष्टि, संरक्षण और परिवर्तन को परस्पर जुड़े हुए आयामों के रूप में देखा जाता है। नटराज, अर्थात् नृत्य के अधिपति, ब्रह्मांड की गतिशील लय तथा ज्ञान, संस्कृति, विज्ञान और अध्यात्म के बीच सामंजस्य का प्रतिनिधित्व करते हैं, वे तत्व जिन्होंने सहस्राब्दियों से भारतीय चिंतन को आकार दिया है। जी-20 शिखर सम्मेलन के आयोजन स्थल पर इस प्रतिमा की स्थापना ने वैश्विक मंच पर भारत की सांस्कृतिक विरासत और सभ्यतागत ज्ञान का प्रभावशाली प्रस्तुतीकरण किया तथा संतुलन, सृजनशीलता और सार्वभौमिक कल्याण के एक शाश्वत प्रतीक के रूप में प्रस्तुत किया।

एक्सपो 2025, ओसाका और वेनिस बिएनाले 2026 जैसे अंतरराष्ट्रीय मंचों ने भारत को ऐसा अवसर प्रदान किया है, जहां वह तकनीकी नवाचार और सांस्कृतिक निरंतरता को साथ लेकर चलने वाले अपना विशिष्ट आख्यान प्रस्तुत कर सके। प्रदर्शनियों, कलात्मक प्रस्तुतियों और पारंपरिक ज्ञान प्रणालियों के माध्यम से भारत अपनी सभ्यतागत पहचान को वैश्विक स्तर पर अभिव्यक्त कर रहा है तथा अंतरराष्ट्रीय सांस्कृतिक संवाद में सक्रिय योगदान दे रहा है। ये सहभागिताएं दर्शाती हैं कि भारतीय संस्कृति केवल ऐतिहासिक अध्ययन का विषय नहीं है, बल्कि एक जीवंत और विकसित होती हुई शक्ति है, जो आज भी समकालीन सृजनशीलता और बौद्धिक आदान-प्रदान को प्रेरित करती है।

समग्र रूप से देखा जाए तो पिछले एक दशक के दौरान आरंभ की गई सांस्कृतिक पहल में एक सुसंगत दृष्टि दिखाई देती है। चाहे वह पांडुलिपियों का संरक्षण, शैक्षिक सुधार, सांस्कृतिक मानचित्रण, विरासत संरक्षण, संग्रहालयों का विकास, तीर्थस्थलों का पुनरुद्धार, सांस्कृतिक कूटनीति हो अथवा सार्वजनिक संस्थानों और राष्ट्रीय प्रतीकों की पुनर्कल्पना, इन सभी प्रयासों का उद्देश्य विकास को ऐतिहासिक स्मृति से तथा नवाचार को परंपरा से जोड़ना है। अब संस्कृति को किसी गौण विषय के रूप में नहीं देखा जा रहा है, बल्कि शासन, शिक्षा, कूटनीति, पर्यटन और राष्ट्रीय विकास के एक अभिन्न अंग के रूप में स्वीकार किया जा रहा है।

'विकसित भारत@2047' : विरासत से भविष्य की ओर

जैसे-जैसे भारत 'विकसित भारत@2047' के लक्ष्य की ओर अग्रसर हो रहा है, उसका यह सभ्यतागत पुनर्जागरण राष्ट्रीय परिवर्तन की सबसे परिभाषित विशेषताओं में से एक सिद्ध हो सकता है। यह प्रयास अतीत के प्रति मात्र भावनात्मक लगाव या स्मृतियों में लौटने का अभ्यास नहीं है; बल्कि यह अतीत की गहरी समझ के आधार पर भविष्य का निर्माण करने का एक प्रयास है। कई दृष्टियों से समकालीन भारत उस प्रश्न का उत्तर खोजने का प्रयास कर रहा है, जिसका सामना सभी प्राचीन सभ्यताओं को करना पड़ता है। "क्या कोई सभ्यता अपने अतीत को पुनः प्राप्त कर सकती है, वह भी बिना उसमें बंधे हुए? और क्या कोई आधुनिक राष्ट्र अपनी पहचान को भूले बिना प्रगति कर सकता है?"

शायद इसका उत्तर 'महासुभाषित संग्रह' के एक श्लोक (श्लोक संख्या 3116) में निहित है-

अलब्धं चैव लिप्सेत्, लब्धं रक्षेत् प्रयत्नतः।
रक्षितं वर्धयेच्चैव, वृद्धं पात्रेषु निक्षिपेत्॥

अर्थात् -

"जो अभी तक प्राप्त नहीं हुआ है, उसे प्राप्त करने की आकांक्षा रखनी चाहिए। जो विरासत में मिला है, उसे सावधानीपूर्वक संरक्षित करना चाहिए। जो संरक्षित है, उसका संवर्द्धन करना चाहिए और उसे जिम्मेदारी से योग्य हाथों में सौंप देना चाहिए, ताकि वह आने वाली पीढ़ियों के लिए उपयोगी बन सके।"

यह श्लोक भारत के उस सभ्यतागत दृष्टिकोण को अभिव्यक्त करता है, जो विघटन और पुनर्निर्माण की बजाय निरंतरता, संरक्षण, उत्तरदायित्वपूर्ण संवर्द्धन और नवीनीकरण पर आधारित है। ❑

प्रकाशन विभाग के विक्रय केंद्र

नई दिल्ली	पुस्तक दीर्घा, सूचना भवन, सीजीओ कॉम्प्लेक्स, लोदी रोड	110003	011-24367260
पुणे	ग्राउंड फ्लोर, कैरियर बिल्डिंग, महादाजी शिंदे, बीएसएनएल, टीई कंपाउंड, क्लब के पास, कैंप	411001	
कोलकाता	8,एस्प्लेनेड ईस्ट	700069	033-22488030
चेन्नई	'ए' विंग, राजाजी भवन, बेसेंट नगर	600090	044-24917673
तिरुवनंतपुरम	प्रेस रोड, गवर्नमेंट प्रेस के निकट	695001	0471-2330650
हैदराबाद	कमरा सं 204, दूसरा तल, सीजीओ टावर, कवाड़ीगुड़ा, सिकंदराबाद	500080	040-27535383
बेंगलुरू	फर्स्ट फ्लोर, 'एफ' विंग, केंद्रीय सदन, कोरामंगला	560034	080-25537244
पटना	बिहार राज्य कोऑपरेटिव बैंक भवन, अशोक राजपथ	800004	0612-2675823
लखनऊ	हॉल सं-1, दूसरा तल, केंद्रीय भवन, सेक्टर-एच, अलीगंज	226024	0522-2325455
गुजरात	4-सी, नेप्च्यून टावर, चौथी मंजिल, आश्रम रोड, अहमदाबाद	380009	079-26588669
गुवाहाटी	दूरदर्शन कैम्पस, आर जी बरूआ रोड, कामरूप मेट्रोपोलिटन, असम	781024	9101982938